शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संजीव कृत 'अहेर' उपन्यास में ग्रामीण जनजीवन

नीरज चौहान (शोधार्थी)
डॉ.संध्या गंगराडे (निर्देशक)
महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

युवा उपन्यासकार संजीव ग्रामीण जनजीवन के चितेरे हैं वर्षों बाद भी ग्राम्य जीवन में सामाजिक परम्पराएँ अपने मूल रूप में मौजूद हैं जाति व्यवस्था की विकृतियों का दंश आज भी सहन करना पद रहा है। अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, छुआछूत ने लोगों को जकड रखा है। संजीव ने अपने उपन्यासों में इन स्थितियों का सूक्ष्म अवलोकन किया है। वे इनके पीछे छिपे शोषक वर्ग के स्वार्थ को बखूबी पहचानते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में संजीव के अहेर उपन्यास में ग्रामीण सामजिक जीवन का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

सामाजिक चेतना संजीव के उपन्यासों का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। चूँकि भारतीय समाज का ढांचा वही पुरानी वर्ण-व्यवस्था पर आधारित है। इसीलिए इस सामाजिक ढांचे में विकृतियां होना स्वाभाविक है। शोषण, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, छुआछूत जैसी विकृतियां आज भी समाज में विद्यमान हैं, किन्तु संजीव की पैनी दृष्टि इन सभी विकृतियों का अवलोकन करती है। इसके पीछे छिपे शोषक वर्ग के स्वार्थ को बखूबी पहचानती है। इसलिए वे समाज के शोषित वर्ग को सचेत करते हुए उनमें चेतना का भाव जगाते हैं।

जाति व्यवस्था

भारतीय समाज में जातिवाद एक कठोर सच्चाई है। इसने सामाजिक समरसता को बहुत क्षति पंहुचाई है। जातिवाद एक ऐसी गंभीर समस्या है जो समाज में अनेक विसंगतियाँ उत्पन्न करती है। जातिवाद वह संकुचित भावना है जिसके वशीभूत होकर व्यक्ति समाज और राष्ट्र को विशेष महत्व न देकर अपने जाति-हितों को महत्व देता है। भारत में शहरों की तुलना गांवों में जातिवाद की अवधारणा को ज्यादा महत्व दिया जाता है। जिसके कारण गांवों में असमानता अधिक पाई जाती है।

जातिवाद एक संकीर्ण विचारधारा है जो एक-दूसरे लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता में बाधक सिध्द होती है और जातीय संघर्ष को बढ़ावा देती है। देश में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार से जातिगत प्रभाव कम हुआ है, लेकिन पूर्णरूप से अभी समाप्त नहीं हुआ है। संजीव अपने अहेर उपन्यास में लिखते हैं. "नहीं, ठोस जमीन पर! हवा मैं आपका हमारा समाज है। मैं अहेरिया के गांव की परम्परा बदलने को कृत संकल्प हूँ, निशाना अबोध जीवों पर नहीं, शोषकों को बदल देना मेरा लक्ष्य है। एक भी आदमी मेरा साथ दे या न दे। जय उत्तेजित हो उठा था।"1 जातिवाद की एक बुराई ऊँच-नीच की भावना है। ग्रामीण अंचलों में जाति-पाति की भावना पाई जाती है। यही भाव ग्रामीण लोगों के बीच ऊँच-

नीच की भावना को बढ़ावा देते हैं। जिसके चलते ग्रामीण समाज में सामाजिक दूरियां बढ़ने लगती हैं। जातिगत भावों का जिक्र संजीव अपने उपन्यास में करते हैं, "जातिगत, वर्गगत, सांस्कृतिक और सामाजिक खाई के रहते आदमी-आदमी के बीच का भेदभाव और शोषण खत्म नहीं हो सकता। जब तक समाज में जाति भेदभाव नहीं मिटेगा तब समाज का विकास नहीं हो सकता।"2

इस भाव ने अश्पृश्यता को जन्म दिया है। ग्रामीण अंचलों में व्याप्त अनेक समस्याओं में सामाजिक विषमता प्रमुख कारण रही है। समाज में उन जातियों को अस्पृश्य माना जाता है, जो घृणित पेशे से अपनी जीविकापार्जन करती है। अस्पृश्यता समाज की एक ऐसी व्यव्सथा है जिसके अन्तर्गत अस्पृश्य समझी जाने वाली जातियों के लोग उच्च वर्ग के लोगों को नहीं छू सकते। "कई षड़यंत्रकारी घटनाओं में अस्पृश्यों के प्रति घृणाभाव, छूआछूत और उत्पीडन की घटनायें प्रचुर मात्रा में दृष्टिगोचर होती हैं। जैसे मोतीलाल (स्पृश्य) के यहाँ मुरतिया नामक एक अस्पृश्य लड़का हलवाही का काम करता रहा है। एक दिन मुरतिया पानी भरने हेतु कुंए पर चढ़ गया। तभी गाँव के मुखिया शिवलाल के लड़के रामलाल की नजर मुरतिया पर जाती है। उसका सामंती खून खौल उठता है। वह मुरतिया की पिटाई कर देता है। मुरतिया इस प्रताड़ता की शिकायत करने और न्याय प्राप्ति हेतु मोतीलाल के पास पहुँचता है। मोतीलाल उच्चजाति का है। स्वयं को अस्पृश्यों के एक अग्रणी नेता और उद्धारक समझते हैं, लेकिन उनका यह रूप कितना नकली है।"3

ग्रामीण समाज में जाति-पांति टूट रही है और उसके स्थान पर समाज दो वर्गो में विभाजित हो रहा है। 'किशनगढ़ के अहेर' में जय के द्वारा जातिगत भावों को उभारा गया है। वर्णभेद और वर्गभेद के प्रति खुला विरोध संजीव ने अपने उपन्यासों में किया है। सवर्णो और अछूतों के विवाह संबंधों को और वर्णभेद की बढ़ती व्यवस्था का कड़ा विरोध किया गया है। दूसरी और जय निम्नवर्ग के साथ एकत्रित होकर जातीगत भावों का कड़ा विरोध करता है, "क्या माने-माने लगाए हो ? साफ-साफ बोलो न कि तुम अपनी मर्जी से बिना जाति-कुजाति के विचार किए बियहि के काहे होई आप-अ ? फौजदारसिंह पितक गए।"4

किशनगढ़ का जय उच्च जाति का है जबकि चांदनी अछूत जाति की कन्या है। जाति-पांति ग्रामीण जन की अभिव्यक्ति कुछ भी हो लेकिन संजीव बदलती संस्कृति का दिल से स्वागत करते हैं, "क्या करू चांदनी ? इंसान ही तो हूँ। अभी तक मैं अपना काम ढंग से शुरू भी नहीं कर पाया। चांदनी ने जय के बालों में उंगलियां फेरते हुए कहा काम तो हो रहा है, सदियों की परती, पथरीली जमीन है, झाड़-झंखाड़ से लदी हुई चांदनी बोलती रही" 5 'किशनगढ़ के अहेर' उपन्यास मे अछूतों को पशुवत मानने वाले समाज का सवर्ण वर्ग ब्रह्मबाबा पाखण्ड़ी अपने ही घर में काम करने वाली सोना का यौनाचार करते समय धर्मशास्त्र को एक और रख देते हैं। सोना अपनी पीड़ा को इन शब्दों के द्वारा कहा करती है, "आहर भाप नहीं पाई सोना और जनेऊ कान पर चढ़ाये ही पीछे से उसे गंझोटे में पकड़ कर ले गए बाबा। सोना ने चीखना चाहा, मगर लोकलाज के भय से चीख न पाई और बाबा ने उसे ब्राहमणी बना ही दिया।"6 उच्च वर्ग के लोग निम्नवर्ग के लोगों की इज्जत को खिलौना समझकर खेल करते हैं।

जातीयता के कारण ग्रामीण समाज विभिन्न गुटों मे बंट जाते हैं। संजीव के उपन्यास किशनगढ़ के अहेर में जातीयता प्रचुर मात्रा में व्याप्त है। हरिजन नेता मुलई मास्टर और जय गांव वालों के खिलाफ आवाज उठाते हैं, "नेता मुलाई मास्टर पिछड़ों के नेता, सम्पन्नों, सवर्णो के नेता - आश्चर्य था सब एक ही सुर में बात करते जय के साथ रहने पर सबकी वही गति होगी जो राजा मुसहर की हुई। हरिजन और पिछड़ों ने जय को बड़ी जातियों का नेता कहा और बड़ी जातियों ने उसे हरिजन और पिछड़ा का नेता बताया।"7

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अहेर - संजीव, पृ. 141

2 अहेर - संजीव ,पृ. 123

3 समाकालीन हिन्दी उपन्यास का एवं वर्ण संघर्ष, डॉ.जालिन्दर इंगले, पृष्ठ 93

4 अहेर, संजीव पृ 95

5 अहेर, संजीव पृ 95

6 अहेर, संजीव पृ 35

7 अहेर, संजीव पृ 115